शिशिर की शांति छीन आया मधुमास वसंत

मार्कण्डेय शारदेय
ज्योतिष व धर्मशास्त्र विशेषज्ञ
markandeyshardey@gmail.com

माघ शुक्ल पंचमी को श्रीपंचमी, वसंत-पंचमी नाम यों ही तो नहीं दिया गया होगा. यों ही वसंत राग का काल यहीं से नहीं माना गया होगा. यह आया, तो पक्षियों के कलरव, प्रकृति पर प्रभाव, ठिठुरन-जकड़न की जगह स्फूर्ति लिये आया. वाग्देवी को मना लाया, लक्ष्मीदेवी को मना लाया, और तो और, मित्रवर कामदेव को भी मना लाया. तभी तो इन सबकी इस दिन पूजा की शास्त्रीयता है. माघ के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से ही वसंत आ जाता है.

लो वसंत-पंचमी आ गयी. वसंत का पंचम दिन. शास्त्रकार भले मीन-मेष में पड़े हों-'मीन-मेषे गते सूर्ये वसन्तः परिकीर्तितः' या चैत-वैशाख मानते हों. वसंत धीर-प्रशांत नहीं, धीरोद्धत व धीरललित ऋतुनायक है. इसलिए इसने पंद्रह दिनों में ही शिशिर की शांति छीन ली, वसंत-राज्य की घोषणा करवा ली. सरसों फूल ही गयी, रबी की फसलें गदरा ही गयीं... पेड़ों में नयी कोपलें फूटने ही लगीं, तो यह क्यों दम साधे? सूरज ठंड को गरमाने ही लगे, तो यह क्यों घुड़की मारे रहे? ऋतुराज का दूत रसाल मंजरियां लेकर आ ही गया.

माघ शुक्ल पंचमी को श्रीपंचमी, वसंत-पंचमी नाम यों ही तो नहीं दिया गया होगा? यों ही वसंत राग का काल यहीं से नहीं न माना गया होगा! यह आया, तो पक्षियों के कलरव, प्रकृति पर प्रभाव, ठिठुरन-जकड़न की जगह स्फूर्ति लिये आया. वाग्देवी को मना लाया, लक्ष्मीदेवी को मना लाया और तो और मित्रवर काम को भी मना लाया. साथ में ससम्मान लिये आता है सृष्टि देवी को, ज्ञान, वाणी एवं कला की आदि स्रोतस्विनी सरस्वती को. तभी तो इन सबकी इस दिन पूजा की शास्त्रीयता है.

श्रीवाली पंचमी की श्रीयुत पंचमी. यह शब्द महिमामय है. लक्ष्मी, सरस्वती, शोभा, सम्मान आदि को अपने में समेटा वसंत प्राकृतिक शोभा के साथ-साथ दोनों महादेवियों के साहचर्य का संकेतक भी है. दीपावली में धन की देवी की वरीयता और बही के रूप में पूजी जानेवाली ज्ञानदेवी की गौणता रहती है, तो यहां ज्ञानेश्वरी की मुख्यता और धनेश्वरी की गौणता. परंतु दोनों की अनिवार्यता को नकारा नहीं गया. क्या ज्ञान के बिना कुछ हो पायेगा? क्या धन के बिना कुछ हो पायेगा? तभी तो ईश्वर-परमेश्वर को भी भगवान बनने के लिए इन दोनों को सहचरी बनाना होता है. इसलिए कहीं-कहीं लक्ष्मी-सरस्वती दोनों को ही विष्णु-शक्ति बताया गया है. सरस्वती को द्वितीय लक्ष्मी-'मुक्तिःमूर्तिमयी साक्षात् द्वितीया कमलालया' भी कहा गाया है. कारण है कि विद्या भी धन ही है-'विद्या-धनं सर्वधन-प्रधानम्'. जहां परा विद्या पारलौकिकता की ओर ले जाती है, वहीं अपरा विद्या जीवन-यापन से संबंधित ज्ञानार्जन, धनार्जन की ओर. हमारे जीवन में दोनों का समान मूल्य है.

कैसे करें मां की आराधना

माघ माह की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि (10 फरवरी) को मां सरस्वती के पूजन का विधान है. अतः सुबह नित्यकृत्य से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारण करें. पूजास्थान में शांतिपूर्वक बैठ जाएं. संक्षेपतः पुस्तक, कलम-दवात को पवित्र आसन पर रख लें. उसके आगे षट्कोण बना लें और छहों कोणों में रोली-मिश्रित अक्षत रखें. अपने बायीं ओर घी का रक्षादीप जला लें. अब शुद्ध जल से छिड़काव कर शुद्धि करें. तिलक लगाएं. हाथ में सुपारी, फूल, अक्षत, रोली, पैसा और जल लेकर संकल्प करें- **'ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः नमः परमात्मने अद्य माघ-शुक्ल-पंचम्यां रविवारे..... गोत्रे उत्पन्नः/उत्पन्ना अहं ...नामाहं/नाम्नी अहं श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फल-प्राप्तये श्रीसरस्वती-प्रीतये च यथाशक्ति षड्देवता-पूजन-पूर्वकं सरस्वत्याः, लक्ष्म्याः, काम-वसन्तयोः च पूजनं करिष्ये'.** इतना बोलकर षट्कोण के पास संकल्प के जलादि रख दें. अब षट्कोण के छहों कोष्ठको में **'ॐ गं गणपतये नमः, ॐ सूर्याय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ महेश्वराय नमः, ॐ शिवायै नमः'** कह कर गणेश, सूर्य, अग्नि, विष्णु, शिव एवं पार्वती का जल, रोली, फूल, धूप, दीप, प्रसाद देकर पंचोपचार से पूजन करें- **तरुण-शकलमिन्दोः बिभ्रती शुभ्रकान्तिः कुचभर-नमितांगी सन्निषण्णा सिताब्जे। निजकर-कमलोद्यत् लेखनी-पुस्तकश्रीः सकल-विभव-सिद्ध्यै पातु वाग्देवता नः॥** पुस्तक, लेखनी, दवात, वाद्ययंत्र आदि पर गुरुप्रदत्त अथवा इस सरस्वती मंत्र-'**ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ॐ सरस्वत्यै नमः**' से अक्षत छोड़ कर आवाहन करें. इसी मंत्र से या श्रीसूक्त के मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करें. फिर '**ॐ लक्ष्म्यै नमः**' से लक्ष्मीजी का, अनंतर आम्रमंजरी पर '**ॐ कामदेव-वसन्ताभ्यां नमः**' मंत्र से कामदेव एवं वसंत का अर्चन करें. **लक्ष्मीः मेधा धरा पुष्टिः गौरी तुष्टिः प्रभा धृतिः। एताभिः पाहि तनुभिः अष्टाभिः मां सरस्वति॥**

ज्ञान को सत्त्व गुण-प्रधान माना गया है, इसलिए ज्ञान की देवी शुक्लवर्णा बतायी गयी हैं-'शुद्ध-सत्त्व-स्वरूपा सा शांतरूपा सरस्वती'. श्वेता, महाश्वेता भी कहा जाता है. यह केवल श्वेतवर्णा ही नहीं, श्वेतप्रिया भी हैं, तभी तो पूजा में इन्हें अर्पणीय वस्तुओं में सफेद चंदन, श्वेत वस्त्र, शंख,सुगंधित श्वेत पुष्प, मक्खन, दही, दूध, लावा, मिसरी, नारियल, सफेद तिल की मिठाई आदि का विशेष शास्त्रीय निर्देश है!

ज्ञान के समस्त स्रोतों की जननी सरस्वती ही हैं, इसलिए यह विद्यार्थियों, अध्यवसायियों विद्वानों, कवियों, गायकों, वादकों, कला प्रेमियों, ऋषि-मुनियों तथा देवताओं की इष्ट देवी हैं-

श्रेष्ठा श्रुतीनां शास्त्राणां विदुषां जननी परा।
वागधिष्ठातृ-देवी सा कवीनाम् इष्टदेवता॥

उत्पत्ति किस रूप में हुई : सरस्वती आदिशक्ति ही हैं, दुर्गा ही हैं; इसलिए सर्वशक्ति-स्वरूपा आद्या, विद्या हैं, परंतु मूर्तिमती व देवीरूपा सरस्वती का आविर्भाव कहीं परमात्मा व कृष्ण के मुख से तो कहीं आदिदेवी से बताया गया. पुनः कहीं ब्रह्मा जी से भी वर्णित हैं. जहां सप्त सरस्वतियां हैं, नौ अंगदेवियां हैं, वहां किनकी उत्पत्ति किस रूप में हुई, यह कहना मुश्किल है. तो भी विधाता की पुत्री और पत्नी दोनों होना मानवीय सामाजिक-पारिवारिक मर्यादा के विपरीत है. वस्तुतः यहां समाजशास्त्र नहीं, परा‌विज्ञान से ही देखना होगा. कारण कि यह दैवी लीला है, प्रकृति-पुरुष की समन्विति है. लोकदृष्टि से भी प्रत्येक सृजन सर्जक की संतान ही होता है. एक साहित्यकार की रचना भी उसकी पुत्री ही है. औरस नहीं, मानस ही सही. वह अपनी कृति के साथ खूब रमण भी करता है और प्यार से पालता भी है. इसलिए पिता भी है, पति भी है. यही तथ्य ब्रह्मा और ब्रह्माणी के साथ भी है. इस प्रसंग में ऐसी ही दृष्टि अपनानी होगी, तभी मन में मैल नहीं बैठेगा. आखिर परा शक्तियां किस रूप में कैसे सृष्टि का संस्कार करती हैं, ये तो हमारी पहुंच से दूर है न!

॥ सुवचन ॥

जो हमारा हितैषी हो, दुख-सुख में बराबर साथ निभाये, गलत राह पर जाने से रोके और अच्छे गुणों की तारीफ करे, केवल वही व्यक्ति मित्र कहलाने योग्य है.
- वेद

मनुष्य खो गया है और जंगल में भटक रहा है, जहां वास्तविक मूल्यों का कोई अर्थ नहीं. वास्तविक मूल्यों का अर्थ मनुष्य को सिर्फ तब ही हो सकता है, जब वह आध्यात्मिक पथ पर कदम रखता है.
- साईं बाबा

मंदिरों की आवश्यकता नहीं है, न ही जटिल तत्वज्ञान की. मेरा मस्तिष्क और मेरा हृदय मेरे मंदिर हैं, मेरा दर्शन दयालुता है.
- दलाई लामा

॥ प्रेरक-प्रसंग ॥

दरगाह में वसंत पंचमी

सूफीवाद का सिर्फ एक ही सिद्धांत है - इंसान चाहे किसी भी मजहब, जाति या रंग का हो, सभी की सेवा करना. सूफी संत की शांति और एकता का 13वीं सदी का संदेश आज भी मायने रखता है. समाज में बहुत अधिक ध्रुवीकरण होने के बावजूद दरगाह ने हमेशा सभी धर्मों के लोगों और उनके विचारों को स्थान दिया है. इसी की मिसाल है हजरत निजामुद्दीन औलिया का दरगाह, जहां पर वसंत पंचमी पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है. यह परंपरा 700 वर्षों से जारी है. यह हमारी गंगा-जमुनी तहजीब का हिस्सा है. यह हमें एकजुट करता है. इसके संदेश को फैलाने की जरूरत है. मौसम और त्योहारों को धर्म से ऊपर उठ कर देखा जाना चाहिए और यही रिवाज निजामुद्दीन दरगाह पर भी सालों से वसंत का रंग चढ़ता रहा है. इसके पीछे दिलचस्प दास्तां है.

करीब 700 साल पहले जब हजरत निजामुद्दीन औलिया अपने भतीजे की मौत के बाद उदास रहने लगे थे. हजरत निजामुद्दीन अविवाहित थे, लेकिन उन्हें अपने भाई-बहनों के बच्चों से गहरा प्रेम था. उनका एक भतीजा तकीउद्दीन नूह उनकी बहन जैनब का बेटा था. उन्हें उससे बहुत लगाव था और जब उनके उस चहेते भतीजे की मौत हो गयी, तो निजामुद्दीन को बड़ा सदमा लगा. वे उदास रहने लगे. संत के शिष्य अपने गुरु की इस हालत को देख बहुत चिंतित थे और उन्हें खुश करने के तरीके खोजने लगे. एक दिन कवि अमीर खुसरो कुछ सूफी दोस्तों के साथ सैर पर थे. उन्होंने रास्ते में मीरा महिलाओं के एक समूह को सरसों के फूल ले जाते हुए देखा, जो चटक पीले रंग के कपड़े पहने मस्त हो कर गाते-बजाते-नाचते जा रहे थे, जहां आज हुमायूं का मकबरा है. इस माहौल ने खुसरो का मन मोह लिया. उन्होंने भक्तों से वजह पूछी, तो पता चला कि वह ज्ञान की देवी सरस्वती को खुश करने के लिए उन पर पर सरसों के फूल चढ़ाने जा रही हैं.

अमीर खुसरो ने उनसे इस तरह के मीरा के पहनावे का कारण पूछा. महिलाओं ने कहा कि आज वसंत पंचमी है और वे मंदिर जा रही हैं. तब खुसरो ने भी अपने गुरु को खुश करने के लिए पीली पोशाक पहन ली और ढोलक बजाते हुए निजामुद्दीन के पास जाकर नाचने लगे. जानकार मानते हैं कि खुसरो महिला की तरह कपड़े पहने थे. उनका यह रूप व अंदाज हजरत निजामुद्दीन के होठों पर एक मुस्कान ले आया. तब निजामुद्दीन ने उनसे पूछा कि तुम इस तरह से कपड़े क्यों पहने हो? खुसरो ने जवाब दिया कि आपके चेहरे पर मुस्कान वापस लाने के लिए.

तब से जब तक खुसरो जीवित रहे, वसंत पंचमी का त्योहार मनाते रहे. खुसरो के देहांत के बाद भी चिश्ती सूफियों द्वारा हर साल निजामुद्दीन औलिया की दरगाह पर यह त्योहार मनाया जाने लगा और आज तक वसंत पंचमी के दिन हर साल निजामुद्दीन की दरगाह पर यह परंपरा कायम है.

वरिष्ठ पत्रकार मेहर मुर्शीद अपनी किताब- 'सॉन्ग ऑफ दरविश : निजामुद्दीन औलिया- द सेंट ऑफ होप एंड टॉलरेंस' में लिखते हैं कि वसंत को हर साल निजामुद्दीन की दरगाह पर मनाया जाता है, जिस दिन खुसरो को दुख और अवसाद की गहराई से अपने गुरु की मुस्कान वापस मिली.

दरगाह पर एक पीरजादा और निजामुद्दीन के प्रत्यक्ष 21वीं पीढ़ी के वंशज अल्तमश निजामी के मुताबिक इस दिन दरगाह द्वारा वसंत पंचमी के लिए पीले रंग की पोशाक का दान किया जाता है और हजारों भक्त पीले रंग के कपड़े पहनकर व सरसों के फूल लेकर दिल्ली के संत का अभिवादन करते हैं, जिन्होंने अपने जीवनकाल में एक हिंदू वसंत उत्सव में खुशी पायी थी. 3 अप्रैल, 1325 को निजामुद्दीन औलिया दुनिया से रुख्सत हो गये. निजामुद्दीन औलिया के जाने के छह महीने बाद ही खुसरो ने भी अपने प्राण त्याग दिया. उन्हें औलिया की मजार के पास ही दफ्न कर दिया गया.

निजामुद्दीन ने एक बार अपने शिष्यों से कहा कि 'हर कौम रास्त राहे, दीन-ओ किबला गाहे' (अर्थ : हर मजहब का अपने-अपने मक्का जाने का रास्ता साफ है) तात्पर्य है कि प्रत्येक विश्वास का ईश्वर को खोजने का अपना तरीका है. बाद में अमीर खुसरो की कविता में यह देखा गया- 'मन किबला रास्त करदम बार सिम्त कजकुलाहे' (अर्थ : मैं तो अपना सारा ध्यान उस तिरछी टोपीवाले (निजामुद्दीन औलिया) में ही लगाता हूं.

भारतीय अंतरात्मा में निज़ामुद्दीन की दरगाह के महत्व का अंदाजा इस घटना से लगाया जा सकता है कि विभाजन की अशांति के दौरान जब दरगाह पर सांप्रदायिक हमले की आशंका थी, तब तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने व्यक्तिगत रूप से दरगाह का दौरा किया और अपने सहयोगियों को कहा कि 'हमें संत के पास जाना चाहिए, इससे पहले कि दरगाह और इसके लोगों को कोई नुकसान पहुंचे, ताकि हम उनकी नाराजगी को समझ सकें'.

● ताज खान

॥ वास्तु टिप्स ॥

लाभ के लिए कार्यस्थल में इन बातों का रखें ध्यान

कई बार ऑफिस या कार्यस्थल पर काम करने में मन नहीं लगता. आमदनी में इजाफा या काम में तरक्की नहीं दिखती. वास्तुशास्त्र में कुछ नियम बताये गये हैं, जिनका पालन करने से अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं. अगर आपके केबिन या शाप में आपने छोटा-सा मंदिर बना रखा है, तो यह मंदिर आपकी कुर्सी के पीछे नहीं होना चाहिए. यानी जब आप बैठें, तो आपकी पीठ मंदिर की तरफ नहीं होनी चाहिए. ऑफिस या दुकान में पैसे रखने की जगह इस तरह निर्धारित की जाये कि जब अलमारी या रैक खुले तो उत्तर की तरफ खुले. आपका मुंह पूर्व या उत्तर दिशा की तरफ हो, तो बेहतर है. यदि संभव न हो, तो पश्चिम की तरफ भी मुंह किया जा सकता है, लेकिन भूल कर भी अपनी कुर्सी इस तरह न रखें कि काम करते समय आपका मुंह दक्षिण की तरफ हो. आपका टेबुल आयताकार होना चाहिए और कुर्सी के पीछे दीवान हो. कुर्सी के पीछे खाली स्पेस न छोड़ना शुभ नहीं माना जाता.

॥ ज्योतिष ॥

विवाह पूर्व क्यों जरूरी है वर-वधू का कुंडली मिलान

डॉ एनके बेरा, ज्योतिषाचार्य

विवाह और दांपत्य जीवन प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है. उसकी सफलता, असफलता, सुख-दुःख सब कुछ इन पर निर्भर करता है. प्रत्येक मनुष्य के जीवन का यह सबसे महत्वपूर्ण अंग है. विवाह-संस्कार के सभी कर्मों में सप्तपदी सर्वोपरि महत्व रखती है. वर-वधू द्वारा साथ-साथ सात फेरे लगाने को ही सप्तपदी कहते हैं. विवाह का बंधन धर्म का बंधन है. जिस प्रकार धर्म किसी भी स्थिति में त्यागा नहीं जाता है, उसी प्रकार विवाह का बंधन किसी भी स्थिति में तोड़ा नहीं जाता. पति के साथ रहनेवाली पत्नी पति की अर्धांगिनी होती है. वस्तुतः गृहस्थ धर्म के विभिन्न अनुष्ठानों की पूर्ति के लिए विवाह होता है और गृहस्थ धर्म के सभी कार्यों के लिए पति-पत्नी एक दूसरे पर निर्भर होते हैं.

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने ज्योतिष अनुसंधान से विवाह के विषय में ज्योतिष ग्रंथों व विवाह संस्कार के ग्रंथों में कुछ सूत्र स्पष्ट किये हैं, जिनके अनुकरण करने से वर-वधू का गृहस्थ जीवन सुखद, आनंदमय हो सकता है. विवाह संबंध तय करने से पूर्व जन्म कुंडली मिलान आवश्यक माना जाता है. इसमें वर-कन्या की अभिरुचियां, प्रकृति की समानता, जीवन के विभिन्न पक्षों में उनकी आपसी पूरकता जैसे संवेदनशील पहलुओं पर विचार करने के लिए मेलापक की ज्योतिष शास्त्रीय परंपरा है, जो बेहद सटीक व महत्वपूर्ण है.

विवाह का बंधन धर्म का बंधन है. जिस प्रकार धर्म किसी भी स्थिति में त्यागा नहीं जाता, उसी प्रकार विवाह का बंधन किसी भी स्थिति में तोड़ा नहीं जा सकता. ज्योतिष व विवाह संस्कार के ग्रंथों में कुछ सूत्र स्पष्ट किये गये हैं, जिनके अनुकरण से वर-वधू का गृहस्थ जीवन आनंदमय हो सकता है.

मेलापक के दो पूर्ण आधार है : 1. नक्षत्र मेलापक व 2. ग्रह मेलापक. नक्षत्र मेलापक के आधार पर वर-कन्या के जन्म नक्षत्र व जन्म राशि के माध्यम से अष्टकूट मिलान किया जाता है. इससे उनकी प्रकृति और अभिरुचिगत समानता का मूल्यांकन किया जाता है. वर-कन्या की कुंडलियों में मंगल, सूर्य, शनि, राहु, केतु की स्थिति के परस्पर मूल्यांकन के आधार पर दोनों ही परस्पर अनुकूलता या प्रतिकूलता का विचार ग्रह मेलापक का एक पहलू है- इन्हीं पाप ग्रहों की स्थिति के आधार पर मांगलिक मिलान किया जाता है. ग्रह मेलापक का दूसरा पहलू है. दोनों कुंडलियों में नवग्रहों की स्थिति का परस्पर मूल्यांकन व विभिन्न भावों की स्थिति के आधार पर त्रिएकादश, सम, सप्त आदि स्थितियों का निर्णय व इसका फल कथन है.

नक्षत्र मेलापक के 8 पक्ष हैं, जिन्हें अष्टकूट कहा गया है : 1. वर्ण 2. वैश्य 3. तारा 4. योनि 5. ग्रह-मैत्री 6. गण-विचार 7. भकूट 8. नाड़ी के माध्यम से दोनों कुंडलियों का मेलापक किया जाता है. पूर्ण अनुकूलता होने पर वर्ण वैश्यादि में क्रमशः 1,2,3 से 8 तक अंक दिये जाते हैं. इन अंकों का योग 36 है. इस प्रकार अष्टकूट मिलान का आधार 36 गुण हैं, जिसमें से 18 गुण मिलना आवश्यक माना गया है.

राशिफल

डॉ एनके बेरा

मेष सामाजिक और रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी. नौकरी में पिछले कई दिनों से चली आ रही समस्या का समाधान मिलेगा.

वृष परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे. संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा. अव्यवस्थित दिनचर्या से कामकाज में असुविधा होगी.

मिथुन आपकी परिस्थिति तथा लापरवाही का दूसरे फायदा उठायेंगे. अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें. वाहन की सवारी सावधानी से करें.

कर्क स्वास्थ्य ठीक रहेगा. मामले-मुकदमे में सफलता मिलेगी. शत्रुओं पर विजय. परिश्रम के बावजूद स्थिति मनमाफिक नहीं रहेगी.

सिंह व्यापार-व्यवसाय में लेन-देन संबंधी विवाद से दूर रहें. अनावश्यक भाग-दौड़ अधिक करनी पड़ेगी. अपने सोचे अनुसार काम कम होंगे.

कन्या जोखिम के काम सावधानी से करें. आर्थिक परेशानी होगी. उच्चस्तरीय लोगों से संपर्क बनाने की कोशिश सफल नहीं होगी. आकस्मिक धन लाभ होगा.

तुला मकान, संपति, नये व्यापार-धंधे में सफलता मिलने का योग है. परिवार में विवाहादि शुभ कार्य करने का योग बनेगा. स्वजन-मित्रों का सहयोग मिलेगा.

वृश्चिक आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी. नया काम शुरू होने में अब कोई देर नहीं. अड़चनें दूर होंगी. चित्त में प्रसन्नता होगी. अनेक महत्वपूर्ण काम जो लंबित थे, पूरे हो सकते हैं.

धनु घर में बड़े लोगों का समागम होगा. भूमि-भवन-वाहन सुख की अनुकूलता रहेगी. यात्रा होगी. सामाजिक संपर्क का लाभ उठा सकते हैं.

मकर व्यापार-धंधे में लाभ होगा. बड़े-बुजुर्गों का आर्शीवाद मिलेगा. प्रमुख व्यापारियों अधिकारियों एवं उच्चस्तरीय लोगों से आप संबंध बनाने की चेष्टा करें.

कुंभ नौकरी में उन्नति होगी. बेरोजगारों को रोजगार के साधन उपलब्ध होंगे. आवश्यक कामों में आपकी व्यवहार कुशलता सिद्धि और प्रसिद्धि देने वाली है.

मीन मानसिक उलझनें होंगी. आपने जिस पर भी आज तक भरोसा किया होगा या स्वयं कष्ट उठा कर उसको सुख दिया होगा, ऐसा व्यक्ति आपके विरोध में कार्य करेगा.

शब्दपहेली 745

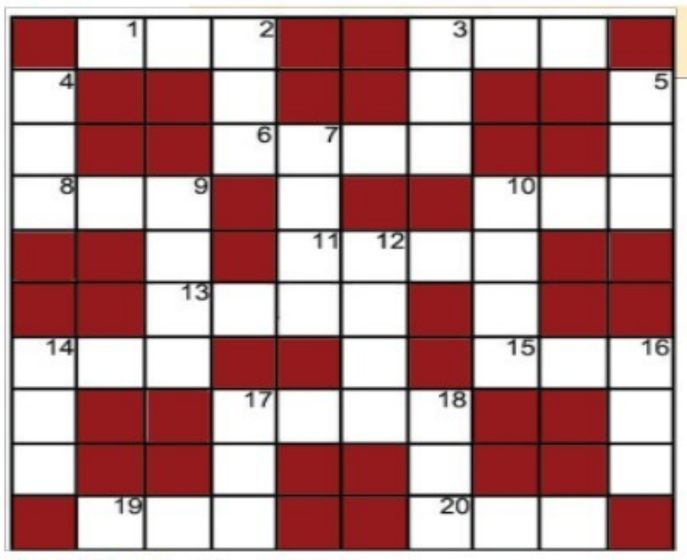

बायें से दायें

1 जनसंख्या (3)
3 डूबा हुआ, मग्न (3)
6 धन कमाने वाला, उपार्जन करने वाला (4)
8 काल+आदि = (3)
10 बुरी दशा, दुर्दशा (3)
11 देखने का ढंग, दृष्टि (4)
13 आजादी (4)
14 बुरा सपना (3)
15 पाकशाला, भोजन बनाने का कमरा (3)
17 वह शब्द जो संज्ञा के लिए प्रयुक्त किया जाता है (4)
19 पृथक, भिन्न (3)
20 आरसी, आईना (3)

बायें से दायें

2 दीक्षा देने वाला (3)
3 स्थिर, निश्चित, अटल (3)
4 माला, सुमिरनी (3)
5 छोटे रियासत का राजा, सरदार (3)
7 नक्शा (4)
9 दिन में सोना या सपने देखना (4)
10 वैभवशाली (4)
12 गर्म पानी से धोना, तपा कर धोना (4)
14 खराब स्थिति, बुरी अवस्था (3)
16, महादेव, शिव को यह भी कहते हैं (3)
17 संपूर्ण शरीर, शरीर के सभी अंग (3)
18 सहायता (3)

शब्दपहेली उत्तर

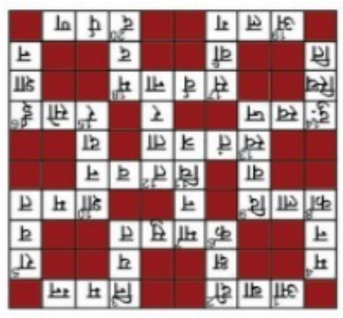

सुडोकू नवताल

पहेली नंबर 4095

7	8	1				2	5	3
2	6	4				1	7	9
5	4	3	1		7	4	6	8
9	5			4			2	
		3	9		6	7		
	7			8			1	5
3	9	7	2		5	6	4	1
6	4	2				5	3	7
8	1	5				6	9	2

MANGAL SENACHA BANGALORE

सुडोकू नवताल - 4094 का हल

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

5	9	4	2	3	6	1	8	7
8	7	3	1	4	5	2	9	6
6	1	2	8	7	9	3	5	4
1	6	7	9	8	2	4	3	5
3	8	5	4	1	7	6	2	9
2	4	9	6	5	3	7	1	8
7	5	6	3	9	1	8	4	2
4	2	1	5	6	8	9	7	3
9	3	8	7	2	4	5	6	1